आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
वर्ष 1, अंक 1, जून 2015, पृ. 36–43

ग्रामीण लखनऊ में भूमि विनिमय एवं सामाजिक स्तरीकरण के आयामों की गत्यात्मक प्रकृति

*सुप्रिया सिंह **

पिछले कुछ वर्षों में बढ़ते हुए औद्योगीकरण के कारण कृषि योग्य भूमि तेजी से गैर–कृषकीय भूमि में परिवर्तित हो रही है। भूमि की बढ़ी हुई कीमतों ने कृषकों को अपनी भूमि ऊँची कीमतों में बेचने के लिए प्रेरित किया है, जिससे गांवों में बहुत सारे ऐसे सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन आ रहे हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यहाँ तक कि ग्रामीण अध्ययनों की कई शोध ट्रेन्ड रिपोर्ट्स में भी नगरों का ग्राम पर प्रभाव और ग्रामीण–नगरीय अर्न्तक्रियाओं को भावी अध्ययनों के लिए प्रस्तावित किया गया है (चौहान 1994, ऊम्मन 2000, जोधका 2009)। प्रस्तुत प्रपत्र ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि विनिमय से आए परिवर्तन और गतिकी तथा ग्रामीण स्तर पर इसके सामाजिक स्तरीकरण पर प्रभाव का अध्ययन है। प्रपत्र मुख्यतः लखनऊ महानगर के समीप एक गांव में वर्ग, प्रस्थिति और शक्ति संरचना में भूमि विनिमय के कारण आ रहे बदलावों के अध्ययन पर केन्द्रित है।

सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्तों को मुख्यतः दो प्रमुख भागों में बाँटकर देखा जा सकता है : पहला प्रकार्यात्मक और दूसरा संघर्षात्मक सिद्धांत। संघर्ष और सामन्जस्य को एक ही सामाजिक वास्तविकता के दो पहलू मानते हुए वर्तमान में सामाजिक स्तरीकरण को बहुल अवधारणात्मक ढ़ांचे के आधार विश्लेशित करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। सामाजिक स्तरीकरण के विश्लेषण के लिए मुख्य बल अब बृहद सिद्धान्तों के निर्माण से सीमित सैद्धान्तिक श्रेणियों के संकुलों जैसे प्रस्थिति, धन और शक्ति को दिया जाने लगा है। जाति, वर्ग, अभिजन और पेशेगत एवं व्यवसायिक श्रेणियां वे मुख्य संरचनात्मक इकाइयां हैं, जिनका समाजशास्त्रियों ने भारतीय सामाजिक स्तरीकरण के विश्लेषण के लिए प्रयोग किया है; अन्ततः ये सभी श्रेणियां एक अन्योन्याश्रित सामाजिक स्तरीकरण के रूप में प्रस्थिति, धन और शक्ति के रचनात्रय से ही सादृश्यता रखती हैं (सिंह : 1974)।

जाति भारतीय गांवो में सामाजिक स्तरीकरण को विष्लेशित करने की एक महत्वपूर्ण इकाई होने के साथ ही, जाति का संरचनात्मक विशिष्टतावादी विष्लेशण भारत में स्तरीकरण के अध्ययनों की सबसे प्रभावी विशेषता रही है। श्रीनिवास ने सस्कृतीकरण के माध्यम से जातियों के मध्य गतिशीलता का उल्लेख किया है जिसकी परिणति संरचनात्मक विभेदीकरण के रूप में होती है। जातीय स्तरीकरण पर अधिकांश अध्ययन जो कि जातीय उपकल्पना के समरुत्थान शक्ति की अभिधारणा में विश्वास रखते है,उनका सैद्धान्तिक उन्मेष संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक होता है (सिंह 1974)। हाल के अध्ययनों में के0 एल0 शर्मा (2006) ने जातीय संरचना में गतिषीलता को वैयक्तिक, पारिवारिक और समूह के स्तरों पर उल्लेख किया है, लेकिन ग्रामीण भारत में असमानता के अन्य विभिन्न पहलू है जिन्हें मात्र जातीय ढांचे में अर्न्तगत पूर्ण रूप से स्पष्ट नही किया जा सकता है (बेतेः 2012)।

वर्ग एक अन्य महत्वपूर्ण श्रेणी है, जो कि ग्रामीण समाज में स्तरीकरण के विश्लेषण के लिए प्रयोग की गई है। कष्शक वर्ग संरचना कई षोधकर्ताओं का मुख्य अध्ययन बिन्दु रहा है। लेनिन ने कष्शकों को पांच विभिन्न श्रेणियों में बांटकर देखा। थॉर्नर ने सम्पूर्ण कृषक आबादी को मालिक किसान, मजदूर में विभाजित कर पुनः इन श्रेणियों को उप–श्रेणियों में विभाजित किया है। इसके अलावा कई अन्य लोगों ने भी कृषक समाज को वर्गीय संरचना के आधार पर समझने की कोशिश की है।

*** विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, रिसर्च फेलो, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ**

के0 एल0 शर्मा ने स्तरीकरण के अध्ययनों को दो श्रेणियों में विभाजित किया है : (1) जातीय स्तरीकरण पर आधारित अध्ययन; तथा (2) बहुआयामी अध्ययन। पहली श्रेणी के चर्चित अध्ययनों में क्रोबर, वेबर, बेली, लेविस, मेयर, माथुर, मजूमदार और मैरियट के अध्ययन हैं। इन समाजशास्त्रियों एवं मानवशस्त्रियों ने जाति को एकमात्र सामाजिक संस्तरण की संस्था के रूप में देखा है। इनमें से किसी भी अध्ययन में वर्ग और शक्ति की प्रघटना का उल्लेख नही देखा गया है। सामाजिक स्तरीकरण के बहुआयामी अध्ययन जाति को सामाजिक स्तरीकरण की एक पूर्ण समावेशी श्रेणी के आधार पर नही समझते हैं। आर्थिक स्थिति, जीवन शैली, शिक्षा, व्यवसाय और व्यक्तित्व की विशेषताओं का मूल्यांकन एक व्यक्ति की उसके समुदाय या जाति में प्रतिष्ठा के आकलन के लिए किया जाता है (सुरेन्द्र षर्मा : 2006)। प्रस्तुत अध्ययन भी स्तरीकरण के द्वितीय प्रकार पर केन्द्रित करता है तथा भूमि विनिमय के कारण सामाजिक स्तरीकरण के आयामों में गत्यात्मकता की व्याख्या करता है।

गोल्डथॉर्पे एवं लॉकवुड (1967) ने ब्रिटेन के समृद्ध श्रमिकों के अध्ययन में पाया कि श्रमिक वर्ग के बूर्जुवाकरण की अवधारणा के विपरीत वे मध्य वर्ग में सम्मिलित नही हो रहे थे, वे केवल भौतिक लाभों से सम्बद्ध थे न कि प्रतिष्ठा और पदानुक्रम से। मध्य वर्गीय मूल्य अभी भी उनके सामाजिकता के प्रतिमान में सीमित प्रभाव रखते थे। इस बात के बहुत कम ही संकेत मिले है कि समृद्ध श्रमिक मध्य वर्गीय समाज के साथ सम्मिलन की प्रक्रिया में है, और न ही अधिकांश मामलों में वे इसे एक अनुकरणीय शैली के रूप में देखते हैं। गांवों में भूमि की बिक्री ने भी कृषकों के मध्य समृद्धि पैदा की है, लेकिन यह समृद्धि किसी प्रकार का श्रम करके उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि यह भूमि को ऊंची कीमतों पर बेंच कर आई है। कृषकों का बूर्जुवाकरण हो रहा है और वे अपने को मध्य वर्ग की तरह पहचानने भी लगे हैं। श्रमिकों के मध्य समृद्धि उनमें व्यवसाय के अन्दर गतिशीलता की ओर इंगित करती है; लेकिन ग्रामीण कृषकों के मध्य यह समृद्धि व्यवसायिक गतिशीलता से परे एक प्रकार की संरचनात्मक व्यवसायिक गतिशीलता की ओर अग्रसर है। न केवल कृषकों का गैरकिसानीकरण हुआ है, बल्कि कृषकों में तेजी से मध्य वर्ग का विकास हुआ है । यहां यह प्रासंगिक है, कि इस समृद्धि का परीक्षण बदलती हुई प्रस्थिति, और शक्ति संरचना एवं उसके फलस्वरूप ग्रामीण स्तरीकरण में परिवर्तन के बिन्दुओं को चिन्हित किया जाये।

अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान समय में यह सर्वविदित है कि ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से जो बड़े शहरों के समीप है, इनमें भूमि विनिमय ने उन कृषकों में धन की काफी वृद्धि की है जिनके पास भूमि है, जिसके परिणामस्वरूप आयी नव–समृद्धि ने कृषकों के जीवन अवसरों में भी वृद्धि की है। जैसा कि पूर्व उल्लिखित है इन नव–घनाढ्य कृषकों के सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं ने समाज वैज्ञानिकों एवं विश्लेषकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। प्रस्तुत प्रपत्र ग्रामीण कृषकों में इस नव समृद्धि का उनकी वर्गीय स्थिति, सामाजिक प्रस्थिति और शक्ति संरचना पर प्रभावों के विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य है :

1. भूमि विनिमय के कारण जीवन अवसरों में वृद्धि की प्रकृति एवं आयामों का वर्णन करना।
2. जीवन अवसरों में वृद्धि एवं परिवर्तित जीवन शैली के फलस्वरूप सामाजिक प्रस्थिति में आए परिवर्तन के आयामों को चिन्हित करना।
3. भूमि विनिमय के कारण शक्ति संरचना की प्रकृति में आए परिवर्तनों को विश्लेषण करना।

शोधपद्धति एवं प्रविधियां

प्रस्तुत प्रपत्र उत्तर प्रदेष में लखनऊ जिले के बख्षी का तालाब ब्लॉक का अध्ययन है। प्रपत्र में नृजातिवर्णन पद्धति के अनुकरण का प्रयत्न किया गया है। गुणात्मक क्षेत्रीय कार्य के आधार पर ग्रामीण समाज में आर्थिक प्रक्रियाओं के कारण परिवर्तित हो रहे सामाजिक स्तरीकरण के आयामों का अध्ययन वर्णनात्मक शोध–प्ररचना पर आधारित है। उत्तरदाताओं का चयन भी उद्देश्यात्मक प्रतिदर्ष के आधार पर किया गया है एवं प्रस्तुत प्रपत्र कुल 20 एकल अध्ययनों पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आंकडे ब्लॉक ऑफिस, सांख्यकीय पत्रिका, ग्रामीण स्कूल और आंगनबाडी केन्द्र से एकत्र किये गये है जबकि प्राथमिक स्रोतों में अवलोकन एवं साक्षात्कार का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

लखनऊ से लगभग 18 किमी0 दूर सीतापुर मार्ग पर स्थित नन्दना गांव एक बहुजातीय गांव है, जिसकी जनसंख्या 1,367 है। इस क्षेत्र के क्षत्रिय मैनपुरी चौहान है, जो अवध के मुगल गर्वनर को पराजित करके इन गांवों में बस गये। चौराई गांव के चौहान ठाकुर के द्वितीय पुत्र बच्छराज सिंह को अपने पिता से 52 गांवो में से 12 गांव मिले (मजूमदार : 1955)। इस गांव का नाम नन्दन सिंह, जो कि बच्छराज के पुत्र थे, के नाम पर पड़ा। इसकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, परिवहन व व्यापार जैसे कार्यो पर निर्भर करती है। भारत के अन्य गांवों की तरह अधिकांश लोग कृषि से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर जुड़े हुए है लेकिन वर्तमान में भूमि विक्रय के कारण कृषि योग्य भूमि तेजी से प्लाटिंग स्थलों में तब्दील हो रही है। नवीकोट नन्दना ग्राम पंचायत में कुल बोया जाने वाला क्षेत्र 300 हेक्टेयर है जिसमें 173 हेक्टेयर रबी की फसलों के लिए और 135 खरीफ के लिए उपयोग किया जाता है। गांव में बोई जाने वाली मुख्य फसले गेहूं, जौ, मक्का तथा मौसमी सब्जियां है। सिंचाई से साधनों में ट्यूब वेल प्रमुख है।

गांव : एक दृष्टि में

	उच्च जातियां	मध्य जातियां	निम्न जातियां	कुल योग
गांव में कुल परिवारकुल जनसंख्या	118677	76534	27156	2211367
पुरूष	352	280	82	714
महिला	325	254	74	653
गांव में कुल साक्षर	557	308	71	936
गांव में कुल निरक्षर	120	226	85	431
विवाहित व्यक्ति	306	230	72	608
अविवाहित व्यक्ति	371	304	84	759
विकलाँग	7	2	1	10
किषोरी बालिका (10–18 वर्ष)	61	36	23	120
6 से 14 वर्ष के स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या बालक बलिका	6861	7361	2522	167145

स्रोत : बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार निदेशालय, यू0पी0 महिला एवं बाल विकास विभाग

भूमि विनिमय एवं सामाजिक स्तरीकरणों के आयामों की गत्यात्मक प्रकृति

लखनऊ महानगर के समीप स्थित होने के कारण गांव शहर के भौगोलिक विस्तार के प्रभाव में है, जो कि गांव की संक्रमणीय स्थिति को व्यक्त करता है, लेकिन भूमि विनिमय एक भिन्न प्रकार के संक्रमण की ओर ले जा रहा है चाहे वह गांव की अर्थव्यवस्था, जीवन शैली एवं जीवन अवसरों में हो। भूमि विनिमय एक प्रकार से ग्रामीण संक्रमण के नए आयामों को प्रदर्शित करता है जो कि शहरी फैलाव से जुड़े हुए है और ये न केवल अर्थव्यवस्था बल्कि सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन ला रहा है, जिसके सामाजिक प्रभाव ग्रामीण जीवन के विभिन्न पक्षों में अवलोकित होते है।

जुरफैल्ट (तथा अन्यः51,2008) ने अपने तमिलनाडू के अध्ययन में भी इसी प्रकार की प्रवृत्ति की उल्लेख किया है कि ''स्थानीय औद्योगीकरण, ग्रामीण और कृषि अर्थव्यवस्था का संरचनात्मक रूपान्तरण एवं सामाजिक नीति के हस्तक्षेपों को पिछले तीन दशकों में सुधरे जीवन स्तर, अच्छी खाद्य सुरक्षा, घटती गरीबी, बेहतर आवास और शिक्षा के स्तर में बदलाव के रूप में देखा जा सकता है।'' मेहता (2011) का मानना है कि कृषि के पुनरूज्जीवन की प्राथमिक पूर्वापेक्षा ग्रामीण भारत में सीमान्त किसानों की समस्याओं का कारगर समाधान है। इनमें से अधिकांश किसान घाटे के जोतदार है क्योंकि कृषि अब उनके लिए एक लाभपूर्ण व्यवसाय नही रह गया है।

बाजार तन्त्र एक अल्पविकसित अर्थव्यवस्था, में सीमान्त किसानों के गरीबीकरण की प्रक्रिया को बढ़ा देता है। गांव में यद्यपि भूमि की बिक्री गैरकिसानीकरण ला रही है लेकिन साथ ही साथ कुछ ऐसे सीमान्त किसानों ने जिनके लिए कृषि एक अनुत्पादक व्यवसाय था, गांव में अपनी छोटी जोतों को बेचकर अन्य जगहों पर अधिक भूमि खरीद ली है। इस प्रकार वे न केवल कृषि के व्यवसाय को जारी रखने में सक्षम हुए हैं साथ ही अपनी आजीविका को भी बेहतर ढ़ंग से बनाए हुए है। कृषि के अलावा भी गांव में अन्य कई व्यवसाय अपनाए जाने लगे है। कुछ लोग भूमि की बिक्री में मध्यस्थता का काम करते है, कुछ ने भवन निर्माण हेतु इमारती लकड़ियों को किराये पर देना शुरू कर दिया है । एक व्यक्ति ने गांव में ही आइसक्रीम पॉर्लर खोल रखा है और वह न केवल गांव बल्कि शहरों में भी इसकी आपूर्ति करता है। गांव में कई व्यक्तियों ने अपने मकान भी किराये पर दे रखे हैं, और व्यापारिक उददेश्य से टैक्सी और ऑटो चलाना भी बढ़ा है। इस प्रवृत्ति से यह पता चलता है कि गांव में कृषि भूमि की बिक्री के कारण कषशि के अलावा अन्य नवीन व्यवसायों को अपनाया जाने लगा है, और कषशि दिन प्रति दिन सीमान्त होती जा रही है। एक ओर कृषक बड़ी संख्या में अपनी जमीन बेच रहे हैं, दूसरी ओर जिनके पास जमीन बची है, उनमें भी कृषि के प्रति रूझान कम हुआ है।

गांव में भूमि ने एक सम्पत्ति के रूप में नव समृद्ध कृषकों को जन्म दिया है जो कि अपनी भूमि को बेचने के बाद और उससे प्राप्त धन के कारण बाजार शक्तियों पर अधिक पहुंच रखते है। बाजार में निवेष के माध्यम से वह अपनी सामाजिक प्रस्थिति को बढ़ाने में सक्षम हुए हैं, क्योंकि धन जीवन शैली की विभिन्नता का प्रमुख निर्धारक है जिस पर प्रस्थिति निर्भर करती है। इन नव–आर्थिक लाभों का उपयोग कृषकों द्वारा प्रस्थिति और सम्मान पाने के लिए किया जा रहा है।

भूमि विनिमय और जीवन अवसरों में गत्यात्मकता–

भूमि स्वयं में एक जीवन अवसर या आर्थिक वस्तु होने के कारण, जमीन की बिक्री जीवन अवसरों को बढ़ा देती है, जिसके फलस्वरूप परिवार की आर्थिक स्थिति और समृद्धि भी बढ़ जाती है। वेबर के शब्दों में इसने उनकी बाजार स्थिति, जो कि एक व्यक्ति की आय से परिभाषित की जाती है को बढ़ा दिया है। भूमि की बिक्री से प्राप्त ध ान ने कृषकों में जीवन अवसरों को बढ़ा दिया है। भूमि विनिमय से जीवन अवसरों और जीवन शैली दोनों में परिवर्तन आया है, जिसके फलस्वरूप लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक दोनों में स्थितियों में सुधार हुआ है। जीवन अवसर वर्ग का निर्माण करते है, जबकि जीवन शैली का सम्बन्ध व्यक्ति की प्रस्थिति से होता है, एक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धि ात है और दूसरा सामाजिक स्थिति से। वर्ग स्थिति अन्ततः आर्थिक स्थिति होती है। वेबर (1946 (1922)) का मानना है कि वर्तमान में वर्ग स्थिति एक प्रभावी कारक है, क्योंकि एक प्रस्थिति समूह के द्वारा अपेक्षित जीवन–शैली सामान्यतः आर्थिक आधार पर निर्धारित होती है। भौतिक एकाधिकार एक प्रस्थिति समूह की विशिष्टता के लिए सबसे प्रभावी प्रेरणा प्रदान करते है, इसीलिए सम्पत्ति का होना और न होना वर्गीय स्थिति की आधारभूत श्रेणी है।

बेते (2012) का मानना है कि श्रीपुरम गाँव में विभिन्न कृषक वर्गों में बीच गतिशीलता काफी तीव्र गति से हो रही है। पहले जमीन को हासिल करने का एकमात्र माध्यम उत्तराधिकार था। वर्तमान में बड़ी मात्रा में जमीन की बिक्री और खरीद देखी जा सकती है, इसके फलस्वरूप गांव में एक ऐसा वर्ग बढ़ रहा है जिसकी प्रवृत्ति कृषक वर्गीय संरचना से पूरी तरह अलग होने की है।

नन्दना गांव में भी इसी प्रकार की वर्गीय गतिशीलता देखी जा सकती है, कई भूस्वामी अपनी जमीन बेचकर अन्य व्यवसायों में कार्यरत हैं, जबकि अन्य कई निम्न या मध्य वर्गीय जातियाँ जिनके पास काफी सीमित भूमि थी गांव में अपनी भूमि को ऊँची कीमतों पर बेचकर उन्होनें अन्य जगह अधिक भूमि खरीद ली है। निम्न एवं मध्यवर्गीय जातियों के पास कुछ उच्च जातियों की तुलना में अधिक भूमि हो जाने के कारण अब भूमि का स्वामित्व उच्च जातियों का एकाधिकार नही रह गया है। गांव में ऐसे कई परिवार है जिनके पास या तो बिल्कुल ही भूमि नही है या थोड़ी मात्रा में है और इस श्रेणी में न केवल निम्न जातियों के लोग है, बल्कि इसमें कुछ उच्च एवं मध्य जातियां भी सम्मिलित हैं, जो कि अब कृषि के अलावा अन्य व्यवसायों को अपनाने के लिए मजबूर हैं। वर्तमान में ग्रामीण समुदाय में वर्गीय संरचना अपने को जातीय संरचना से असम्बद्ध करती मालूम पड़ती है। जमीन की बिक्री से प्राप्त धन से कृषक न केवल आर्थिक

रूप से सम्पन्न हुए हैं , बल्कि उन्होने प्रतिष्ठा प्रदान करने वाली वस्तुओं और सेवाओं में निवेश कर अपनी सामाजिक प्रस्थिति और सम्मान को भी बढ़ाया है। लोगो के जीवन मे धन की भूमिका एवं महत्व दोनो बढ़ा है तथा धन सामाजिक स्थिति का एक प्रमुख निर्धारक बनता जा रहा है। इसका प्रभाव लोगों की वर्गीय स्थिति पर पड़ रहा है और यह गतिशीलता दो दिशाओं में हुई है। एक ओर कुछ लोग कृषक वर्गीय स्थिति से बूजुर्वा वर्ग में सम्मिलित हो गए है और वे न केवल अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का उपभोग करने में सक्षम हुए है , बल्कि गाँव की शक्ति संरचना में भी प्रभाव रखते है अब उन्हें कृषक वर्गीय संरचना में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। दूसरी ओर कुछ कृषकों का सर्वहाराकरण हो गया है, भूमि बिक्री के बाद अब उनके पास गांव में मकान मात्र शेष है एवं अपनी आजीविका के लिए भी उन्हे दैनिक मजदूरी या अन्य व्यवसाओं पर निर्भर रहना पड़ता है।

एक अन्य स्थान पर बेबर (1946 (1922)) कहते है कि तकनीकी प्रतिक्षेप और आर्थिक रूपान्तरण प्रस्थिति पर आधारित स्तरीकरण को चुनौती देता है और वर्गीय स्थिति को महत्वपूर्ण बनाता है। ऐसे युग और देश जिनमें वर्गीय स्थिति सर्वोच्च प्रभाविता रखती है वे सामान्यतः आर्थिक और तकनीकी रूपान्तरण के दौर होते हैं। समय के साथ–साथ आर्थिक स्तरीकरण का कमजोर होना पुनः प्रस्थिति संरचना के विकास की ओर ले जाता है और सामाजिक प्रतिष्ठा की महत्वपूर्ण भूमिका को पुर्नजीवित कर देता है।

भूमि विनिमय और जीवन शैली में गत्यात्मकता–

जीवन शैली की अवधारणा बहुत सुस्पष्ट नही है और यह कार्य की गतिविधियों से लेकर अवकाश के उपयोग तक की परिघटनाओं को सम्मिलित कर सकती है। इसके भौतिक घटकों में आवास, परिधान और भोजन जब कि अभौतिक घटकों में सामान्य रूप से भाषा और आचरण शामिल किए जा सकते हैं (बेते : 2012)।

भूमि विनिमय के कारण ग्रामीण लोगों की जीवन शैली में गत्यात्मकता आई हैं, क्योंकि अब उनके पास लगभग हर आधुनिक सुविधा उपलब्ध है, जैसे कि फ्रिज, रंगीन टी0वी0, कूलर, पंखा, गैस स्टोव, पानी की टंकी आदि। यही नही उनके घरों की बनावट भी बिल्कुल नगरों जैसी है और कई व्यक्ति अब अपने मकानों का निर्माण भी वस्तुकारों की राय लेकर ही कराते हैं। मकान का निर्माण करने वालों को भी शहर से बुलवाते हैं, ताकि वह अपने मकान को अधिक परिपूर्णता प्रदान कर सकें। मेहमानों का स्वागत भी नगरी तरीके से करने लगे हैं। कई घरों में यूरोपीय शैली के बाथरूम और ट्वायलेट्स तथा संगमरमर के पत्थर और नक्काशीदार दरवाजे भी देखे जा सकते हैं। और इन सभी चीजों पर ग्रामीणों का निवेष बढ़ा है। खरीददारी तथा घूमने के उद्देष्य से लखनऊ से आवागमन भी बढ़ा है।
भूमि की बिक्री से प्राप्त धन का एक बड़ा हिस्सा मकानों, अनुष्ठानिक अवसरों, रंगीन टी0वी0, सी0डी0 प्लेयर, फ्रिज, वाषिंग मषीन इत्यादि पर खर्च किया जाता है। इस धन का काफी भाग लोगों द्वारा शराब पीने में भी किया जा रहा है। ग्रामीणों के मध्य विलासिता के वाहनों की खरीद में एक प्रकार की प्रतिस्पर्द्धा दिखाई देती है। हर मॉडल की कारें जैसे; फोर्ड, आइकॉन, ज़ाइलो, इनोवॉ इत्यादि बहुमंजिली इमारतों के सामने खड़े पाना गांव में आम बात है। इस नव आर्थिक समृद्धि का उपयोग प्रतिष्ठा प्रदान करने वाली वस्तुओं और सेवाओं में निवेष के द्वारा उच्च प्रस्थिति एवं सम्मान प्राप्त करने के लिए किया जाता है। गांव के लोगों ने जिनमें कई निम्न जातियाँ भी शामिल है अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भेजना षुरू कर दिया है, क्योंकि अब वे उनकी मंहगी फीस और वैन का किराया देने में सक्षम हैं। गांवों से षहरों में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों की संख्या में भी वृद्वि हुई है।

इस नव समृद्वि का प्रभाव लोगों के सामुदायिक जीवन पर भी दृष्टिगोचर होता है। लोगों के बीच दिन–प्रति दिन की अन्तःक्रियाएं घट रही हैं और अधिकांश लोग अपने घरों तक सीमित रहने लगे हैं। औरतें अपना ज्यादातर समय जहां पहले पड़ोसियों से बातचीत और एक दूसरे के यहां आने जाने में व्यतीत करती थीं अब अधिकांश समय वे अपने घरों में टी0वी0 देखना पसन्द करती हैं। इस प्रकार के परिवर्तन निम्न और मध्य जातियों में भी देखे जा सकते हैं। उनके परिवारों में भी औरतों का घरों से बाहर जाना कम हुआ है और कुछ परिवारों में औरतों का पहले से भिन्न अब खेतों में जाना भी पूर्णतः बन्द हो चुका है। पहनावे में भी कई परिवर्तन आए है और लड़कियों में आधुनिक कपड़ों का चलन काफी बढ़ गया है। अपने पसंद के कपड़ों की खरीद के उद्देश्य से स्त्रियों का बाजारों में आना जाना बढ़ गया है। वे लोग जो किन्ही कारणों से जमीन नहीं बेच पाए है जल्द से जल्द उसे बेचना चाहते हैं ताकि वे भी अपने

पड़ोसियों की तरह अच्छा मकान और सभी प्रकार की सुख सुविधाओं का उपभोग कर सकें। उनके पड़ोंसियों की उध्र्व गामी गतिशीलता उनमें अधोगामी गतिशीलता ला रही है और यह सापेक्षिक वंचना ऊँची कीमतों पर जमीन बेचनें का एक प्रमुख प्रेरक कारक है।

गांव के नव–निर्मित मकान षहर के मकानों की तरह चैनल गेट और चारदीवारी वाले हैं जब कि पहले गांव के मकानों का निर्माण इस प्रकार का होता था कि पड़ोसियों और अन्य परिचितों के आने जाने के लिए वे काफी खुले होते थे। परन्तु मकानों की आधुनिक बनावट के कारण लोगों का अपने पड़ोसियों से सम्पर्क और अर्न्तक्रिया दोनों काफी कम हुए हैं। अब पहले की तुलना में आना जाना कम हुआ है। यह गोल्डथार्पे और लॉकवुड (1967) के समृद्ध श्रमिकों के विपरीत हो रहा है। जिनमें समृद्धि से आपसी अर्न्तक्रियाओं में परिवर्तन नहीं पाए गये। यहां एक विलगाव की प्रवृत्ति और मध्य वर्गीय मूल्यों की ओर परिवर्तन हो रहा है जो कि जीवन षैली के एक आयाम के रूप में देखा जा सकता है। व्यक्तिवादी मूल्य बढ़े हैं और कई माता–पिता अपने बच्चों से अलग स्वायत्त रूप से रहना पसन्द करते हैं। जमीन ने उन्हें जोड़ रखा था और उसकी बिक्री ने बच्चों और माता–पिता के व्यक्गित सम्बन्धों को भी तोड़ दिया है जिसकी परिणति गांव में नाभिकीय परिवारों के रूप में हो रही है।

गांव में कुछ निम्न जातियों ने विभिन्न आयोजनों पर अधिक पैसा खर्च करना शुरू कर दिया है जिससे कि वह अपनी सम्पन्न स्थिति को दर्शा सकें और उच्च जातियों की तरह अपनी सामाजिक प्रस्थिति को बढ़ा सकें। निम्न जातियों में जमीन बेचकर अधिक धन पाने के बाद इस प्रकार का आडम्बरपूर्ण खर्च कुछ हद तक निम्न जातियों के द्वारा उच्च जातियों की जीवन शैली अपना कर अपनी सामाजिक गतिशीलता को प्रदर्शित करने की इच्छा में निहित है। गांव में निम्न जातियाँ एक प्रकार से दमित थीं और उच्च जातियों द्वारा भोगे जाने वाली सभी विशेषधिकारों से वंचित थीं। लेकिन भूमि बेचने के बाद अब उनके पास अपनी सुविधाओं और विलासिता की वस्तुओं पर खर्च करने के लिए काफी पैसा हो गया है जिससे वे अपनी प्रस्थिति में भी सुधार कर रही हैं।

भूमि विनिमय एवं शक्ति संरचना में गत्यात्मकता–

सरप (1996) के अनुसार इस बात के लिए कई व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं कि क्यों भूमि की बिक्री कम विकसित देशों में असामान्य है। उनमें से एक व्याख्या यह है कि भूमि का स्वामित्व परिवार की शक्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ा देता है। सरप आगे कहते हैं कि कृषक परिवार अपनी भूमि को बनाए रखना चाहते हैं। और केवल अत्याधिक विपत्ति में ही उससे अलग होते हैं लेकिन अध्ययन के अर्न्तगत गांव में भूमि बिक्री ने कई निम्न जातियों को शक्ति प्रदान की है जिसने गांव की शक्ति संरचना को भी प्रभावित किया है, क्योंकि भूमि की बिक्री से प्राप्त धन से उन्होनें न केवल अपनी सामाजिक प्रस्थिति में सुधार किया बल्कि कुछ शक्ति भी प्राप्त की है जिससे वे पूर्व में वंचित थे। बेते (2012) ने अपने श्रीपुरम गांव के अध्ययन में शक्ति संरचना में आई गतिकी का अध्ययन किया है। उनका मानना है कि यद्यपि पारम्परिक समाज में शक्ति ज्यादातर जातीय संरचना के आधीन थी, लेकिन वर्तमान में इसने अपने आप को जाति से अलग कर लिया है और विभिन्न जातियों के बीच शक्ति के संतुलन को अनदेखा नहीं किया जा सकता है यद्यपि इसकी प्रकृति अस्थिर है और जाति से भिन्न कारक इसको बनाए रखने और दिन प्रति दिन बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। पारम्परिक रूप से शक्ति केवल उच्च जातियों के पास थी और निम्न जातियाँ उनके अधीन थीं। यद्यपि नए नियमों कानूनों ने निम्न जातियों की उन्नति में योगदान दिया है, लेकिन भूमि की बढ़ी हुई कीमतों ने उन्हें अच्छे अवसर उपलब्ध कराए हैं। अब वे गांव में अपनी कम भूमि को ऊँची कीमत में बेचकर दूसरी जगह खरीदने में सक्षम हो गए हैं। पूर्व में वे अपनी आजीविका हेतु उच्च जातियों की भूमि पर कार्य करने को बाध्य थे क्योंकि उनकी छोटी जोत उनकी आजीविका के लिए पर्याप्त नही थी। लेकिन वर्तमान में वे अपनी भूमि को ऊँची कीमतों पर बेचकर अपना मकान बनवाना और अन्य जगह भूमि खरीदना ज्यादा पसन्द करते हैं। यहां तक कि कुछ निम्न जातियाँ अपनी भूमि नई जगहों पर बटाई पर देने लगी हैं जबकि पूर्व में वे स्वयं ही अपनी खेती करते थे। क्योंकि राजनैतिक शक्ति सामान्यतः वर्ग और प्रस्थिति पर निर्भर करती है इस कारण निम्न जातियों को भी कुछ शक्ति प्राप्त हुई है और वे राजनैतिक रूप से भी स्वायत्त हुई हैं।

बेते (2012) आर्थिक शक्ति को राजनीतिक शक्ति से सम्बन्धित करते हुए कहते हैं ''राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के लिए व्यक्ति के पास कुछ आर्थिक आधार का होना आवश्यक है।'' एक अन्य स्थान पर वे भूमि को शक्ति प्राप्त करने के एक निर्णायक कारक के रूप में अस्वीकार करते हैं। अध्ययन के अर्न्तगत गांव में भी बड़ी जोतों का स्वामी होना एक व्यक्ति की षक्ति का प्रतीक नही रह गया है बल्कि वर्तमान में व्यक्ति की आर्थिक हैसियत ही उसकी प्रस्थिति और शक्ति की निर्धारक बन गई है। गांव के लोग अब अपने धन का उपयोग स्थानीय नेताओं से अपने झगड़ों में मदद प्राप्त करने के लिए करते है। एक प्रकार से इस नव समृद्धि ने गांव में झगड़ो को बढ़ा दिया है क्योंकि अब लोग मुकदमेबाजी और शक्तिशाली स्थानीय नेताओं का समर्थन प्राप्त करने के लिए अधिक धन खर्च करने में सक्षम हो गये हैं। वे स्थानीय झगड़े जिन्हें पहले आपसी सहमति से सुलझा लिया जाता था अब, ध न के बल पर उच्च स्तर तक बढ़ जाते है। भूमि विनिमय में मध्यस्थता करने वाले ग्रामीणों ने शहरी ऐजेण्टों से अच्छे सम्पर्क बना लिए हैं जिसके कारण गांव में भी उनकी शक्ति में बढ़ोत्तरी हुई है।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि भूमि विनिमय ने गांव में वर्ग, प्रस्थिति और शक्ति संरचना को प्रभावित किया। वर्गीय गतिशीलता एक प्रकार से नकद अर्थव्यवस्था और भूमि के बाजारीकरण का परिणाम है जिसके फलस्वरूप जाति और शक्ति संरचना में भी परिवर्तन देखे जा सकते हैं।

वेबर के स्तरीकरण के सिद्धान्त में हम सामाजिक स्तरीकरण को वर्ग, प्रस्थिति और शक्ति में बांट कर देख सकते हैं। यदि हम भूमि विनिमय को बेबर के स्तरीकरण के मॉडल में देखे तो भूमि विनिमय इन तीनों सामाजिक आध ारों में परिवर्तन ला रहा है और यदि इनमें परिवर्तन होता है तो स्वाभाविक रूप से इसका प्रभाव गांव की सामाजिक संरचना पर भी पड़ेगा। भूमि विनिमय से जीवन शैली और जीवन अवसर दोनों में परिवर्तन आया है तो भी बहुत सारी सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताएं अभी भी बनी हुई हैं जिसमें एक विरोधाभासी और अप्रतिमानित स्थिति को जन्म दिया है।

निष्कर्षतः यह कहां जा सकता है कि ग्रामीण समाज, विशेषरूप से नगर निकस्टथ ग्रामों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूपान्तरण की प्रक्रिया जारी है, न केवल पूंजीवादी बाजार और अन्य आर्थिक प्रक्रियाएं ग्राम्य समाज में प्रविष्ट हुई हैं, बल्कि साथ ही साथ नगरीकरण के विभिन्न आयाम भी ग्राम्य समाज को आध ारभूत रूप में प्रभावित कर रहे हैं।

सम्भवतः इसलिए संरचात्मक एवं व्यवसायिक गतिशीलता की विभिन्न प्रक्रियाएं गांव में जारी हो गई है, और वे गॉव में स्तरीकरण के विभिन्न स्वरूपों (वर्गीय, जातीय, लौगिंक) को प्रभावित कर रही है। इस रूपान्तरण की प्रक्रिया ने ग्राम्य समाज में अर्न्तविरोधों और प्रतिमानहीनता में वृद्वि कर दी है। निष्कर्षतः यह स्वीकार करना होगा कि ग्राम्य समाज अब पूर्व की भाँति अपने में सापेक्षतः सीमित, समरूपी, सरल व पूर्ण समुदाय नहीं रह गए हैं, बल्कि एक गातिशीलता, बढ़ती हुई विषमरूपता, जटिलता से युक्त एक ऐसे सामाजिक अंश/मंच मेंं रूपान्तरित हो रहे हैं, जहां से नगरीकरण, भूमण्डलीकरण एव बाजारीकरण की प्रक्रियाएँ गुजरती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बेते, आन्द्रे. 2012 (2007) *मार्क्सिज्म एण्ड क्लास एनालिसिस,* नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

बेते, आन्द्रे. 2012 (1965) *कास्ट, क्लास एण्ड पॉवर,* नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

चौहान, बी0आर0 1974 '' रूरल स्टडीज : ए ट्रेण्ड रिपोर्ट'' *ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन सोसियोलॉजी ऐण्ड सोसियल एन्थ्रोपोलॉजी* (ICSSR) खण्ड I- बाम्बे : पापुलर पब्लिकेषन.

गोल्डथार्पे, जॉन, तथा अन्य, 1967. ''दि एफ्लुएण्ट वर्कर एण्ड दि थीसिस ऑफ एमबुजुर्वामेण्ट : सम प्रिलिमनरी रिसर्च फाइडिंग्स्'' *सोसियोलॉजी,* खण्ड. ए पेज. 11–31.

जोधका, सुरिन्दर एस., पॉल डी'सूजा. 2009. ''रूरल एण्ड एग्रोरियन स्टडीज़'' इन योगेष अटल (एड.) *सोसियोलॉज़ी एण्ड सोसियल एन्थ्रोपोलॉज़ी इन इण्डिया* (ICSSR 4जी सर्वेद्ध, नई दिल्लीः पियर्सन.

जुरफैल्ट, गोरॉन. तथा अन्य, 2008. *''एग्रोरियन चेन्ज एण्ड सोसियल मोबिलिटी इन तमिलनाडु''* इकोनॉमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, खण्ड. ग्स्प्प्ए नं0.45 पेज.50–60.

मजूमदार, डी0 एन0 1955. *कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन ऐन इण्डियन विलेज,* नई दिल्ली : एशिया पब्लिशिंग हाउस.

मेहता, उदय, 2011. ''दि प्राबलम्स ऑफ दि मार्जिनल फारमर्स इन इण्डियन एग्रीकल्चर'' इन ए0 आर0 देसाई (एड.) *रूरल सोसियोलॉजी इन इण्डिया,* मुम्बई : पापुलर प्रकाशन प्रा0 लिमिटेड.

षर्मा, ऊर्सुला. 2005. *कास्ट.* नई दिल्ली : वीवा बुक्स प्रा0 लिमिटेड.

सिंह, योगेन्द्र. 1974. ''सोसियोलॉजी ऑफ सोसियल स्ट्रेटीफिकेशन, *''ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन सोसियोलॉजी एण्ड सोसियल एन्थ्रोपोलॉजी* (ICSSR) खण्ड I- बाम्बे पापुलर पब्लिकेशन.

वेबर, मैक्स. (1922) 1946. ''क्लास, स्टेटस एण्ड पार्टी'' इन *मैक्स वेबर : ऐसेज इन सोसियोलॉजी,* एडिटेड एण्ड ट्रान्सलेटेड बाई एच0 एच0 गर्थ एवं सी0 डब्लू0 मिल्स. न्यूयार्क : आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

'नवरचना' में योगदान के लिये निर्देश

1. *'नवरचना'* मूल रूप से लिखे गये समाजशास्त्रीय शोध–पत्रों का स्वागत करता है। शोध–पत्र (6000– 8000 शब्दों से ज्यादा नहीं) का पृष्ठ के एक तरफ टाइप किया होना तथा पंक्तियों के बीच दोहरी जगह के साथ पृष्ठ के चारों तरफ बराबर हाशिया होना आवश्यक है। शोध–पत्र के साथ (100 शब्दों से ज्यादा नहीं) उसका सामान्य सारांश भी संलग्न होना चाहिए।
2. शोध–पत्र को माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में टाइप करके ई मेल द्वारा संलग्नक के रूप में ***pubetdr1994@gmail.com*** पर भेजा जाना चाहिए। लेख के अक्षर **Kruti Dev 010** लिपि में होना चाहिए। अन्य किसी लिपि में टाइप किया हुआ लेख स्वीकार्य नहीं होगा।
3. लेख में उद्धरण के लिए कृपया लेखक — दिनांक की प्रक्रिया को अपनाएं, उदाहरण के लिए, (चौहान 2002)। यदि किसी लेखक के एक अधिक लेखों का उद्धरण दिया जा रहा हो तो कृपया प्रकाशन के वर्षों को अल्पविराम द्वारा अलग (सिहं 1995, 1999)। उद्धरण के पृष्ठ संख्या को कोलन का प्रयोग कर अलग लिखें (मुखर्जी 1995 : 244) तथा यदि एक से अधिक पष्ठों का उद्धरण दिया जा रहा हो तो पृष्ठ संख्याओं को हाइफन का प्रयोग कर लिखें (दूबे 1995 : 244 344)। जब एक से अधिक लेखकों का उद्धरण दिया जा रहा हो तो भिन्न लेखकों को कालानुक्रम के हिसाब से सेमी कोलन अलग कर लिखें (दूबे 1995; मिश्रा 2005; नारायण 2008)। सह–लेखकों के कार्य के लिए, दोनों के नामों को इस प्रकार उद्धृत करें (फ्रैंक और डेविड 1995); तीन से अधिक लेखकों को उद्धृत करने के लिए, पहले नाम के बाद 'और अन्य' का उपयोग करें (हैल्ड और अन्य, 2010)। वही उद्धरण को उसी परिच्छेद में बिना किसी और उद्धरण के आये दोबारा लिखा जाता है तो, 'वही' का प्रयोग करें तथा लेखक के नाम की पुनरावृत्ति किये बिना सम्बन्धित पृष्ठ संख्या को उद्धृत करें (वही.: 44)। अगर राजपत्र रिपोर्ट और सरकारी संस्थाओं के या किसी अन्य संगठन के कार्यों को उद्धृत करना हो तो, जिस संस्था / संगठन ने प्रकाशन को प्रायोजित किया हो तो उसका पूरा नाम लिखें (दिल्ली सरकार 2010), और इन्हें फिर से बाद के प्रसंगों में उद्धृत करना हो तो संस्था/संगठन के नाम का शब्द संक्षेप /लघु रूप लिखें (दि.स. 2010)।
4. लेख में प्रयोग में लाये हुए पुस्तकों का विस्तृत विवरण बाद मे अलग से सन्दर्भ ग्रन्थ सूची इस क्रम में लिखें : (क) लेख : लेखक का नाम; प्रकाशन का वर्ष; लेख का शीर्षक (इन्वर्टिड कोमा में); शोध पत्रिका नाम (इटालिक में); और वोल्यूम सं., अंक सं. और प्रारम्भ और अंत के पष्ठ सं.। (ख) संपादित पुस्तकों /कार्यों में अध्याय; लेखक का नाम; प्रकाशन का वर्ष; अध्याय का शीर्षक (इन्वर्टिड कोमा में); सम्पादक का नाम; पुस्तक का वर्ष (इटालिक में); अध्याय का शीर्षक (इन्वर्टिड कोमा में); अध्याय के प्रारम्भ और अंत के पृष्ठ सं.; प्रकाशन का स्थल; प्रकाशन का वर्ष; प्रकाशन का नाम। सन्दर्भों की सूची में (पहले) लेखक के उपनााम के वर्णक्रमानुसार रूप से लिखा जाना चाहिए।
5. 'नवरचना' एंडनोट स्वरूप का अनुकरण करता है जो इस प्रकार हैः उन सभी व्याख्यात्मक टिप्पणियों को एक साथ क्रमबद्ध करें जिस क्रम में उन्हें मुख्य लेख में उल्लेखित किया गया है (क्रमांक के आधार पर सुपरस्क्रिप्ट का प्रयोग करके) एवं उन्हें लेख के अन्त में पर सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के पहले रखें। एंडनोटस को सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।
6. तलिका, चार्ट, नक्शे, ऑकडे आदि लेख के अन्त में अलग से रखा जाना चाहिए। इन्हें अंकों का प्रयोग कर उपयुक्त शीर्षक/कैप्शन के साथ क्रमानुसार रखें। लेख में उन्हें उनके अंको द्वारा सूचित करें –सारणी 5, नक्शा 1 आदि न कि उनके स्थान द्वारा–जैसे सारणी के ऊपर चित्र के नीचे आदि।
7. अन्य कार्यों से लिए शब्द या वाक्यों को ऐकल उद्धरण चिन्हों के भीतर रखें, दोहरे उद्धरण चिन्हों का उपयोग केवल कोटेशन के भीतर ही करें। यदि कोटेशन पचास शब्दों से अधिक हो तो उन्हें मुख्य टेक्स्ट से अलग लिखें एवं उन्हें पृष्ठ के बाईं तरफ रखें। जब तक पूरा वाक्य उद्धरण का हिस्सा न हो तो विराम चिन्ह उद्धरण चिन्हों के बाहर ही रहना चाहिए।
8. 1से 99 तक के अंकों को शब्दों में लिखें 100 तथा उससे ऊपर के अंकों को ऑकडों में। हालांकि कुछ जगहों पर ऑकडों का प्रयोग किया जाना चाहिए, जैसे दूरीः 3 कि.मी.; उम्रः 32 वर्ष; प्रतिशतः 64 प्रतिशत एवं वर्षः 1995 आदि।
9. योगदानकर्ताओं द्वारा अपने लेख के साथ एक अलग पृष्ठ पर अपना नाम, पद, अधिकारिक पता और ई मेल भेजना आवश्यक है। उन्हीं लेखों के प्रकाशन पर विचार किया जायेगा जिन्हें पहले कभी प्रकाशित नही किया गया हो या जिन्हें किसी अन्य जगह पर प्रकाशन के लिए विचार न किया जा रहा हो। इस आशय की एक घोषणा को लेख के प्रथम पृष्ठ में शामिल किया जाना चाहिए।
10. संपादकीय सम्बधित पत्राचार इस पते पर किया जाना चाहिएः प्रो. वी. पी. सिंह, सम्पादक, नवरचना, 18, बैंक रोड, इलाहाबाद 211002 (उ.प्र.)